जयन्त-माणिक के जासूसी कारनामे

छत्रपति का कटार

हेमेन्द्र कुमार राय़

अनुवादक
जयदीप शेखर

Cover Photo Credit: Image by vector_corp on Freepik

छत्रपति का कटार

जयन्त-माणिक शृँखला की बँगला जासूसी कहानी
'छत्रपति'र छोरा' का हिन्दी अनुवाद

लेखक
हेमेन्द्र कुमार राय

अनुवादक
जयदीप शेखर

PREVIEW COPY

जगप्रभा

Cover Photo Credit:
free-ai-image/fantasy-warrior-sword-artwork_92089213.
Image by vector_corp on Freepik.

-:Hindi eBook :-

CHHATRAPATI KA KATAAR
(The Dagger of Chhatrapati)
Hindi translation of the Bengali detective story 'Chhatrapati'r Chhora' from the 'Jayant-Manik' series.

Original author: Hemendra Kumar Roy (1888-1963)
Hindi translation: Jaydeep Das
(Pen Name: Jaydeep Shekhar)
Copyright: © 2024: Translator
Published by:
JagPrabha
Barharwa (Sahibganj), Jharkhand- 816101
jagprabha.in | jagprabha.bhw@gmail.com
Price: ₹ 60.00
***

हेमेन्द्र कुमार राय

(1888 - 1963)

बँगला में किशोर-साहित्य के एक लोकप्रिय कथाकार। बाल-किशोरों के लिए सैकड़ों कहानियों एवं लघु उपन्यासों की रचना की- बड़ों के लिए भी बहुत कुछ लिखा। 1930 से 1960 के दशकों में उनकी कहानियों के बिना बाल-किशोर पत्रिकाएं अधूरी-सी लगती थीं। मुख्यरूप से उन्होंने दुस्साहसिक (Adventure), जासूसी (Detective) और पारलौकिक(Supernatural), कहानियाँ लिखी हैं। कहानियों में रहस्य (Mystery), रोमांच (Thrill) और भय (Horror) का ऐसा पुट होता है कि दम साधकर कहानियों को पढ़ना पड़ता है। कुछ कहानियाँ खजाने की खोज (Treasure hunt) और वैज्ञानिक कपोल-कल्पना (Science-fiction) पर भी आधारित हैं। उनकी रची 'कुमार-बिमल' और 'जयन्त-माणिक' श्रृंखलाएं अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुई थीं- पहली दुस्साहसिक कहानियों की तथा दूसरी जासूसी कहानियों की श्रृंखला है। उनकी रची पारलौकिक कहानियों को पढ़ने का अलग ही रोमांच है।

***

छत्रपति का कटार 6
सुन्दरबाबू की सजा 6
हत्यानाट्य के किरदार.....8
द्विजेन्द्रनारायण का प्रवेश..... 14
काया का साया 17
छत्रपति का कटार 24
रूमाल, साया, रक्त..... 28
द्विजेन का सौभाग्य..... 35
हत्यारे की स्वीकारोक्ति..... 38
घूँसखोर जयन्त 42
अभिनय का आयोजन..... 47
अनोखा अभिनय..... 51

छत्रपति का कटार

सुन्दरबाबू की सजा

“आज सात दिनों से आपके दर्शन नहीं हैं। आज सात दिनों से चाय की महफिल में आपका आसन खाली पड़ा है! सुन्दरबाबू, इसके लिए आपको सजा भुगतनी पड़ेगी।”

“क्या सजा भुगतनी होगी जयन्त?”

“कठोर सजा! आज एक ही बैठकी में आपको पीनी होगी सात प्याली चाय, खाने होंगे सात टोस्ट और सात एग-पोच!”

“ओह, फिर तो सुन्दरबाबू आनन्द के सातवें आसमान में जा पहुँचेंगे! अच्छी सजा दे रहे हो तुम तो जयन्त!” माणिक ने हँसते हुए कहा।

सुन्दरबाबू बोले, “माणिक की फालतू बात पर कान मत दो जयन्त! तुम्हारे द्वारा तय की गयी शास्ति अत्यन्त कठोर शास्ति है, इसमें कोई सन्देह नास्ति। ध्यान से मेरी तरफ देखो, नियमानुसार म्लान चेहरे और दुःखी भाव के साथ मैं यह सजा स्वीकार करूँगा। आनन्दित होना दूर की बात है, चवन्नी मुस्कान तक नहीं मुस्कुराऊँगा।”

“अच्छी बात है, तो फिर कुर्सी पर बैठ जाईए। सजा भुगतने के लिए तैयार हो जाईए।”

“हुम्म! मैं तैयार हूँ।”

“इतने दिन क्यों नहीं आये?”

“बाद में बताऊँगा। पहले सजा दो। सात प्याली चाय, सात टोस्ट और सात एग-पोच। उफ्फ, कल्पनातीत सजा!”

कोई सात मिनटों में ही सात-सात टोस्ट और एग-पोच उदरस्थ कर सुन्दरबाबू बोले, “अब तुम लोगों के साथ बातचीत करते हुए मैं सप्तप्याली चाय का सदुपयोग करूँगा। क्या जानना चाहते हो जयन्त?”

“इतने दिन क्या कर रहे थे?”

"जाँच।"

"कोई नया मामला शायद?"

"हूँ। ऐसा मामला, जिसे सुलझाना मुश्किल।"

"कैसा?"

"हत्या का मामला, लेकिन कोई सुराग नहीं– अर्थात् हत्यारे ने कहीं भी कोई सुराग-सबूत नहीं रख छोड़ा है। अथाह जल में तैरते-तैरते हाँफ गया हूँ मैं!"

"मामले का विवरण नहीं सुन सकता?"

"बिलकुल सुनोगे, बिलकुल सुनोगे! सुनाने के लिए ही तो मेरा शुभागमन हुआ है। बस, थोड़ा-सा धैर्य धरो। सिर्फ दो प्याली चाय बाकी है। ठहरो, एक ही बार में सुड़ककर काम तमाम करता हूँ। .....हुम्म, अब तुम्हारी क्या राय है माणिक? मैंने नियमानुसार हर्षहीन विमर्ष चेहरे के साथ जयन्त द्वारा दी गयी कठोर सजा को भुगता कि नहीं? अतएव सावधान, भविष्य में मेरे सम्बन्ध में मिथ्या प्रचार नहीं करोगे।"

माणिक बोला, "आज आपने एक बात साबित कर दी।"

"क्या?"

"पुलिसवाले केवल जबर्दस्ती करना ही नहीं जानते, बल्कि वे अभिनय करना भी जानते हैं।"

"अभिनय?"

"हाँ, ऊँचे दर्जे का अभिनय। आप अगर चाह लें, तो शिशिर भादुड़ी के पेट पर लात मार सकते हैं।"

"जयन्त, तुम्हारा यह शागिर्द कभी नहीं सुधरेगा। यह जरूर किसी नये तरीके से मेरी टाँग खींचना चाहता है। मैं लेकिन इस बार गुस्सा करने जा रहा हूँ।"

माणिक कृत्रिम अनुनय के स्वर में बोला, "दुहाई सुन्दरबाबू, आपके मुँह में घी-शक्कर– मेहरबानी करके एक बार गुस्सा होईए!"

सुन्दरबाबू अकचकाकर बोले, "क्या मतलब?"

"मतलब यह है कि आप जब गुस्से में होते हैं, तब आपको छेड़ने में ज्यादा मजा आता है।"

"ज्यादा मजा आता है?"

"हाँ भैया।"

“जब मैं गुस्से में होता हूँ?”

“हाँ, यही तो बात है।”

“तब तो मैं बिलकुल गुस्सा नहीं करने जा रहा।”

“तो फिर हँसिए।”

“नहीं, न तो मैं बुरा मानूँगा, न गुस्सा करूँगा और न ही हँसूँगा।”

“तो फिर मुँह बन्द करके बैठे रहिए।”

“नहीं, मैं मुँह करके बैठे भी नहीं रहूँगा। अभी मैं जयन्त को अपने मामले के बारे में बताऊँगा।”

माणिक हार मानकर बोला, “एवमस्तु।”

हत्यानाट्य के किरदार

सुन्दरबाबू बोले, “जयन्त, तुमने बसन्तपुर के स्वर्गीय जमीन्दार राजा नरेन्द्रनारायण राय का नाम सुना है?”

“सुना है। दानी व्यक्ति थे वे।”

“हाँ, उनके दो बेटे हैं– हीरेन्द्रनारायण और दीनेन्द्रनारायण। एक बेटी हैं– सौदामिनी देवी। बड़े बेटे हीरेन्द्र अविवाहित रहे, छोटे दीनेन्द्र पिता के जीवनकाल में ही विधुर होकर एक पुत्र छोड़कर चल बसे थे; पुत्र का नाम द्विजेन्द्रनारायण है। राजा नरेन्द्रनारायण में यूँ तो बहुत सारे गुण थे, लेकिन वे बहुत जिद्दी और क्रोधी स्वभाव के थे, बेटों के साथ उनकी बनती भी नहीं थी। हालात ऐसे हो गये कि हीरेन्द्र और दीनेन्द्र पिता का घर छोड़कर चले गये। राजा नरेन्द्रनारायण ने वसीयत बनाकर सारी सम्पत्ति बेटी सौदामिनी देवी के नाम कर दी। सौदामिनी का विवाह हुआ। राजा नरेन्द्रनारायण अचानक सन्न्यास रोग[1] से चल बसे। इसके साल भर के अन्दर माँ बनने से पहले ही सौदामिनी विधवा हो गयीं।”

जयन्त ने टिप्पणी की, “यह तो दुर्भाग्य का इतिहास जान पड़ रहा है!”

---

[1] सन्यास रोग– इस रोग में व्यक्ति अचानक गिर कर बेहोश हो जाता है। मस्तिष्क की नाड़ियों में अधिक खून आ जाने के कारण, इन नाड़ियों के कट-फट जाने के कारण, या फिर, सिर में पानी जमा होने के कारण ऐसा होता है।

"हाँ, इसका अन्त भी दुःखान्त है। कोलकाता के उपनगरीय इलाके में राजा नरेन्द्रनारायण की एक हवेली है। विधवा होने के बाद से सौदामिनी वहीं रह रही थीं। बड़े भाई हीरेन्द्र उनसे मासिक हजार रुपये की मदद पाते थे। वे बीच-बीच में बहन से मिलने भी आते थे। छोटे भाई दीनेन्द्र का बेटा द्विजेन्द्र पिता की मृत्यु के बाद से दादाजी की हवेली में रह रहा है– कहने की जरुरत नहीं, सौदामिनी की इच्छा से ही। सौदामिनी की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी यह भतीजा ही होगा। अब मेरे साथ मामले का क्या सम्पर्क है, वह सुनो– आज आठ दिन हुए सौदामिनी देवी की अचानक मृत्यु हो गयी। स्वाभाविक मृत्यु नहीं, अपघात-मृत्यु।"

"हत्याकाण्ड?"

"हाँ! उस दिन सुबह कमरे में जाकर दासी ने देखा– बिस्तर पर सौदामिनी देवी का शव पड़ा हुआ था– सीने पर धारदार हथियार से वार का निशान। हत्यारा कौन है– इसका पता लगाने का कोई उपाय ही नहीं है। घटनास्थल पर जाकर मैंने चप्पा-चप्पा छान मारा, लेकिन एक भी सुराग नहीं खोज पाया। केवल इतना ही अनुमान लगा पाया कि हत्यारा घर के बाहर से नहीं आया था।"

"ऐसे अनुमान के पीछे कारण?"

"सौदामिनी के शयनकक्ष की प्रत्येक खिड़की अन्दर से बन्द थी। कमरे के दरवाजे पर रात में अर्गल भले चढ़ाया नहीं जाता था, लेकिन उस दरवाजे से घुसने से पहले और भी ऐसे दो कमरों से होकर गुजरना पड़ता है, जिनमें दो अन्य दो लोग रहते हैं।"

"आपका सन्देह है कि घर का ही कोई व्यक्ति हत्याकाण्ड के लिए जिम्मेदार है?"

"घर के सभी लोगों से जिरह कर चुका हूँ, सभी सन्देह से परे हैं।"

"घर के व्यक्तियों के बारे में बताईए।"

"बड़ी सम्पत्ति की मालकिन होने पर भी सौदामिनी बहुत सादा जीवन व्यतीत करती थीं। विशाल हवेली में गिनती के ही लोग रहते हैं। तीन-महला[2] मकान है। दो महल तो यूँ समझो कि तालाबन्द ही रहते हैं। एक ही मंजिल का व्यवहार सौदामिनी करती थीं। जिस कमरे से होकर सौदामिनी के कमरे में जाया जा

[2] यहाँ महल का आशय हिस्से से है– तीन खण्डों का मकान। कहानी में आगे हवेली को दुमंजिला बताया गया है।

सकता है, उसमें उनकी पुरानी दासी रहती है। उम्र पचपन, नाम उमातारा। वह आम दासी नहीं है, गरीब कायस्थ घर की है, विधवा है। घटना वाले दिन वह मुहल्ले के एक शादीघर में थियेटर देखने गयी थी। रात एक बजे लौटी थी। सौदामिनी देवी उस समय जीवित थीं या नहीं– यह वह नहीं बता सकती, क्योंकि अपने कमरे में आते ही वह लेट गयी थी और सो गयी थी। उसी ने सुबह उठकर सबसे पहले सौदामिनी को मृत अवस्था में देखा था।

"उसके कमरे के दरवाजे से ही पवित्रबाबू के कमरे में आया जाता है। उनकी उम्र पचास साल है, इस परिवार में लम्बे पच्चीस सालों से काम कर रहे हैं। अभी नायब के पद पर नियुक्त हैं। एक तरह से वे घर के ही आदमी हैं और अत्यन्त विश्वासपात्र हैं। निःसन्तान हैं। पत्नी सुरबाला के साथ इसी घर में रहते हैं। बात-चीत और हाव-भाव से बहुत ही सज्जन। वे भी मुहल्ले के उस शादीघर में थोड़ी देर थियेटर देखने के बाद रात ग्यारह बजे घर लौट आये थे। सुरबाला की उम्र बयालीस है। दमे के प्रकोप से वे करीब बिस्तर पर हैं। घटना वाले दिन वे घर में ही नहीं थीं, मायके गयी थीं।

"इस कमरे से सटा एक छोटा कमरा है। उसमें एक प्रौढ़ा ब्राह्मणी रहती हैं। विधवा। खाना-वाना पकाती हैं। नाम बिन्दुबाला। साथ में रहती है उनकी अविवाहिता बेटी सिन्धुबाला। उम्र पन्द्रह। रसोई के काम में माँ का हाथ बँटाती है।

"उसी महल के दूसरे हिस्से के तीन कमरों में सम्पत्ति का उत्तराधिकारी द्विजेन्द्रनारायण रहता है। उम्र पच्चीस। सुशिक्षित। कॉलेज की पढ़ाई पूरी हो गयी है। कविता लिखने का शौक है, मासिक पत्रिकाओं में कविताएं लिखता है। मैंने जानकारी ली है– सच्चरित्र है। स्वभाव से थोड़ा रोमाण्टिक है। महीने में दो सौ रुपये जेबखर्च मिलता है। पान-सिगरेट तक का शौक नहीं रखता।

"बाकी रही एक और शख्स की बात। उसका नाम मानसी है। उम्र बीस साल। परम सुन्दरी। सुमधुर स्वभाव। सुशिक्षिता। सौदामिनी के पति के दूर के रिश्ते में आती है। माता-पिता की मृत्यु के बाद बिलकुल असहाय हो गयी थी, इसलिए सौदामिनी ने उसे अपने पास लाकर रख लिया था। आज दो वर्षों से वह यहाँ रह रही है। उठते-बैठते हर वक्त उसके बिना सौदामिनी का एक लम्हा भी नहीं बीतता था। पहले नायब पवित्रबाबू ही सौदामिनी के दाहिने हाथ के समान होते थे,

मानसी के आने के बाद से उनका महत्व धीरे-धीरे कम हो गया था। पवित्रबाबू की बातों से लगा कि इसी वजह से मन-ही-मन वे मानसी से बहुत खुश नहीं थे। वैसे, यह स्वाभाविक भी है।

"घर के अन्दर ये ही गिनती के लोग रहते हैं। इसके अलावे हैं दो दरबान, तीन बेयरा, दो माली– सभी परखे हुए हैं, पुराने लोग हैं। वे लोग रात में घर के अन्दर भी नहीं रहते। उनके लिए हवेली के बाहर बागान में अलग से कमरे बने हुए हैं। और फिर वे किस लालच में हत्या करेंगे? सौदामिनी के कमरे से मूल्यवान कोई चीज चोरी नहीं गयी है। .....एक नौकरानी भी है, बर्तन-भाण्डे माँजकर वह चली जाती है।

"घर के जिन लोगों के बारे में बताया, सौदामिनी के जीवन के साथ प्रत्येक का स्वार्थ जुड़ा हुआ है। सौदामिनी के जीवित रहने में ही उन्हें लाभ है। सौदामिनी की मृत्यु के बाद उनकी नौकरी छिन जाने की आशंका है। सम्पत्ति मिलने के बाद द्विजेन क्या करेगा-नहीं करेगा– यह कौन बता सकता है? मानसी बेशक नौकरी नहीं करती है, लेकिन सौदामिनी की मृत्यु के बाद फिर वह असहाय हो गयी है। वह द्विजेन की कोई नहीं है! द्विजेन उसकी जिम्मेवारी लेगा कि नहीं– सन्देह है!"

माणिक बोला, "लेकिन सौदामिनी की मृत्यु से द्विजेन को क्या लाभ नहीं होगा?"

"माणिक, अपराधियों को लेकर मैंने बाल सफेद कर डाले हैं, दुष्ट आदमी क्या मेरी आँखों में धूल झोंक सकता है? अपराधियों की टाईप ही अलग होती है। द्विजेन के सम्बन्ध में अलग-अलग लोगों से जानकारियाँ लेकर भी मैं उसके अन्दर किसी कमी का पता नहीं लगा पाया। खास तौर पर, उसके चेहरे से ही उसके मन का स्पष्ट परिचय मिल जाता है। ऐसा शिशु-जैसा सरल और पवित्र चेहरा जल्दी देखने में नहीं आता।"

जयन्त ने पूछा, "सौदामिनी का भैया हीरेन्द्रनारायण कैसा आदमी है?"

"पता लगाया है। अच्छा आदमी नहीं है– शराबी-जुआरी है। अकेले रहता है, फिर भी हजार रुपये महीने में अपना खर्चा नहीं चला पाता। सौदामिनी की मृत्यु से एक हफ्ता पहले वह बहन के पास और रुपये माँगने आया था, लेकिन उसे नहीं मिला। इसे लेकर भाई-बहन के बीच बक-झक भी हुई थी। हीरेन गुस्से में चला गया, लेकिन फिर भी, उस पर सन्देह नहीं किया जा सकता।"

"क्यों?"

"पहली बात, हत्यारा बाहर से आया था– ऐसा कोई प्रमाण नहीं है। दूसरी बात, बहन की हत्या करके हीरेन अपने पैर में कुल्हाड़ी मारने क्यों जायेगा? सौदामिनी की मृत्यु के साथ-ही-साथ हजार रुपये मासिक का उसका हाथखर्च बन्द हो जा सकता है।"

"फिलहाल सौदामिनी के बारे में और कुछ बता सकते हैं?"

"सकता हूँ। मृत्यु के समय उनकी उम्र थी पैंसठ। दुबली, इकहरी कद-काठी, लेकिन बहुत मजबूत। और पन्द्रह-बीस साल वे अनायास ही यमराज को ठेंगा दिखा सकती थीं। बाप के समान वे भी परले दर्जे की जिद्दी और गुस्सैल थीं। अच्छा-बुरा जो एक बार वे तय कर लेती थीं, फिर उससे डिगने का कोई सवाल नहीं था। घर के लोगों की छोटी-सी गलती भी वे बर्दाश्त नहीं कर पाती थीं, आग-बबूला हो जाती थीं। ऊपर से, बहुत गम्भीर प्रकृति की थीं, मानसी और पवित्रबाबू को छोड़ कोई और उनके पास फटकने का जल्दी साहस नहीं जुटा पाता था। घर का प्रत्येक व्यक्ति उनसे डरता था; लगता नहीं है कि कोई उन्हें पसन्द भी करता था।"

"इतने दिनों में अन्त्य-परीक्षण हो ही गया होगा।"

"वो तो हो ही जाना है।"

"हत्यारे ने किस तरह के अस्त्र का प्रयोग किया है?"

"डाक्टरों के अनुसार– चाकू, लेकिन घटनास्थल पर कोई चाकू-वाकू नहीं मिला।"

"पैरों या उँगलियों के निशान?"

"कुछ नहीं, कुछ नहीं।"

"डाक्टरों के अनुसार सौदामिनी की मृत्यु किस समय हुई?"

"लगभग रात ग्यारह से बारह बजे के बीच।"

जयन्त कुछ देर चुपचाप बैठा रहा। इसके बाद बोला, "सुन्दरबाबू, मामला खासा असाधारण है। एक बूढ़ी को मारकर कोई फिजूल में हत्या का आरोप क्यों अपने सिर लेने जायेगा?"

"हुम्म, यही सवाल तो मेरा भी है!"

"लेकिन निश्चय ही किसी ने फिजूल में बूढ़ी की हत्या नहीं की है। अन्दर-ही-अन्दर कोई बड़ा रहस्य तो है। मैं ऐसे रहस्यमयी मामले ही पसन्द करता हूँ।"

सुन्दरबाबू जोरों से सिर हिलाते हुए बोले, "मुझे लेकिन बिलकुल पसन्द नहीं। बिना सुराग का कोई मामला आने पर पुलिस को नाकों चने चबाना पड़ जाता है।"

"बिना सुराग का मामला अपराधी के शातिरपने को दर्शाता है, लेकिन कौन कह रहा है कि मामले में सुराग नहीं है?"

"कुत्र अस्ति सूत्र? दिखाओ जरा।"

"सूत्र है राजा नरेन्द्रनारायण राय की हवेली के अन्दर।"

"बकवास! इतने दिनों में हवेली के अन्दर कुछ खोजना मैंने बाकी रखा है क्या? सुराग का नामो-निशान नहीं है वहाँ।"

"तो फिर हत्यारा बाहर का आदमी है!"

"असम्भव!"

"देखा जाय। .....आप एक काम कर सकते हैं?"

"बोलो।"

"आपने बताया कि नरेन्द्रनारायण की हवेली के दो महलों में कोई नहीं रहता। मैं और माणिक उन्हीं मकलों के किसी कमरे में हफ्ता भर रह सके– ऐसी व्यवस्था नहीं हो सकती?"

"बड़ी आसानी से। देखा जाय, तो अभी द्विजेन ही घर का मालिक है। मैं अगर यह प्रस्ताव रखूँ, तो बेशक वह बुरा नहीं मानेगा।"

"तो फिर ऐसा ही कीजिए।"

"वहाँ जाकर रहने से ही क्या सुराग जमीन फाड़कर बाहर निकल आयेगा?"

"जमीन फाड़कर न निकले, आदमी का मन फाड़कर तो निकल सकता है न? अपराधी यदि घर के अन्दर है, तो मैं जरूर उसका पता लगा सकता हूँ।"

द्विजेन्द्रनारायण का प्रवेश

कहने को कोलकाता का उपनगरीय इलाका था, लेकिन इलाके में ग्रामीण परिवेश की छाप थी।

दूर तक फैले हरे-भरे खेत, बीच-बीच में ताड़-नारियल की कतार, ऊँची-ऊँची वनस्पतियों के झुरमुट। एक तरफ कालीघाट से निकलकर आ रही थी आदिगंगा की एक शीर्ण धारा। उसके बहते जल पर धूप के स्वर्णकण झिलमिला रहे थे। काफी दूर-दूर पर एक-एक मकान बने हुए थे। ये मकान मन में मानव-बस्ती होने का अहसास भले जगा रहे थे, लेकिन एकान्त से परिपूर्ण हरे-भरे वातावरण के सौन्दर्य को नष्ट नहीं कर पा रहे थे।

जयन्त बोला, "देखो माणिक, दिन के समय ऐसी जगह में दूर-दूर बने ये मकान देखने में बहुत शान्त और सुन्दर लगते हैं। कवि और कलाकार ऐसे घरों में ही रहना पसन्द करते हैं, लेकिन ऐसे एकान्त, निर्जन इलाके में बने ये मकान गहन रात्रि में शहर के किसी भी मकान के मुकाबले ज्यादा भयावह और असुरक्षित साबित हो सकते हैं।"

"ऐसा क्यों कह रहे हो?"

"ऐसे घरों में ही त्रासद नाट्याभिनय की सुविधा और मौका ज्यादा रहता है। इन जगहों में अपराधी पर्याप्त निःसंकोच के साथ अपना काम कर सकते हैं। इसलिए ऐसे घर देखकर मेरे मन में कवित्व नहीं जागता, बल्कि भय जागता है।"

माणिक हँसकर बोला, "अपराध-तत्व में ज्यादा रम जाने के कारण तुम्हारी मानसिक बुनावट बदल रही है।"

"शायद ऐसा ही है माणिक, शायद ऐसा ही है।"

एक विशाल दुमंजिली अट्टालिका, उसके चारों तरफ बागान। फाटक से जयन्त लोगों की मोटर ने बागान में प्रवेश किया।

सुन्दरबाबू ने बताया, "यही है नरेन्द्रनारायण का उपनगरीय महल।"

माणिक बोला, “एक समय में यह महल ही रहा होगा, लेकिन अभी इसमें कोई महलत्व नजर नहीं आ रहा। जाने कितने वर्षों से रंगाई-पुताई नहीं हुई है! बागान में भी बागानत्व नहीं है।”

सुन्दरबाबू बोले, “हूँ, सौदामिनी देवी इन बातों के प्रति बहुत उदासीन थीं। केवल जिस हिस्से में वे खुद रहती थीं, उसी का थोड़ा-बहुत ध्यान रखती थीं। .....वो रहा, हमारी मोटर की आवाज सुनकर द्विजेन खुद ही नीचे उतर आया है।”

मोटर गाड़ी-बरामदे के नीचे आकर ठहरी। एक नवयुवक ने आकर नमस्कार करके कहा, “सुन्दरबाबू, क्या ये ही हमारे यहाँ अतिथि बनने की कृपा करेंगे?”

सुन्दरबाबू बोले, “हाँ, इन्हीं के नाम जयन्तबाबू और माणिकबाबू हैं। जयन्त, ये हैं श्रीयुत् द्विजेन्द्रनारायण राय।”

द्विजेन्द्र बोला, “दुनिया में अच्छा-बुरा कुछ भी व्यर्थ नहीं जाता। हमारे दुर्भाग्य के चलते ही आज इनके-जैसे विख्यात लोगों के साथ परिचय पाने का सौभाग्य मिला।”

जयन्त बोला, “लेकिन मैं शायद फिर यहाँ के किसी के दुर्भाग्य का कारण बन जाऊँ!”

द्विजेन के चेहरे पर से विषाद की एक छाया गुजर गयी। जल्दी से उसने हँसने की कोशिश की, लेकिन हँसी ठीक जमी नहीं।

सुन्दरबाबू ने पूछा, “द्विजेनबाबू, मेरे मित्रगण किस महल में ठहरेंगे?”

“सदर महल में। दादाजी के जमाने में यहाँ बहुत सारे अतिथि-अभ्यागतों का आगमन होता था। वे अक्सर पाँच-सात दिन ठहरते थे। उनके लिए जो कमरे थे, उनमें से दो कमरों को मैंने इनके लिए तैयार करवा दिया है। सीधे वहीं चलते हैं।”

जयन्त शुरू से ही द्विजेन के चेहरे, उसकी भाव-भंगिमा एवं साज-सज्जा पर ध्यान दे रहा था। सुन्दर हँसमुख चेहरा, छरहरी सुगठित देहयष्टि, साफ-सुथरे पहनावे में विलासिता नहीं, बल्कि सुरुचि का परिचय था। बात-चीत में बालसुलभ सरलता होने पर भी बुद्धिमता का अभाव नहीं था। व्यवहार सुसंस्कृत। अपराधियों में इस श्रेणी के लोग नहीं पाये जाते।

लेकिन साथ-ही-साथ एक अन्य विशेषता ने जयन्त का ध्यान आकर्षित किया। द्विजेन हाव-भाव से जरा संकुचित लग रहा था और उसकी आँखों में कैसी